ऊना जनपद में गुग्गा जाहरपीर की गाथा गायन की परम्परा का धार्मिक परिपेक्ष

संजय वर्मा
सह आचार्य (संगीत गायन), राजकीय महाविद्यालय उना,हिमाचल प्रदेश

"भारत वर्ष की आज़ादी के उपरान्त 15 अप्रैल 1948 को हिमाचल प्रदेश को 'ग' श्रेणी का राज्य बना दिया गया। नवम्बर 1966 को पंजाब राज्य के पनुर्गठन के फलस्वरूप तत्कालीन होशियारपुर जिला की ऊना तहसील के पर्वतीय क्षेत्र को हिमाचल में मिलाया गया। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप ऊना तहसील का मैदानी व पर्वतीय क्षेत्र हिमाचल के कांगड़ा जिला में शामिल कर दिया गया। तत्पश्चात् 01 सितम्बर 1972 को ऊना तहसील को विस्तार देते हुए कांगड़ा जिले के कुछ क्षेत्रों को इस तहसील में शामिल कर, इसे पूर्ण ज़िला का दर्जा दे दिया गया। तत्कालीन हमीरपुर उपमण्डल के धुन्दला ब्लॉक को भी इस ज़िले में शामिल कर दिया गया।"

ऊना ज़िला या ऊना जनपद के मुख्यालय ''ऊना नगर'' के नाम की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में कई तरह की धारणाऐं एवं मत प्रचलित हैं। इस स्थान का नाम ''ऊणा–टिब्बा'' नामक एक ऊँचे टीले(पहाड़ी) से लिया गया है। इस ऊणे टीले की चोटी पर सिक्खों के प्रथम गुरू बाबा नानक देव के वंशज बाबा कलाधारी ने अपना डेरा लगाया था। इस स्थान से उन्होने स्थानीय ग्रामीणों को बाबा नानक की पवित्र वाणी से परिचित करवाया। बाबा कलाधारी द्वारा इसी 'ऊणे टिब्बे'को अपना निवास स्थान बना लेने व डेरे का विस्तार होने के फलस्वरूप, पहले 'ऊणा' व कालान्तर में इस जगह का नाम 'ऊन्ना' व अब ऊना हो गया है। नामकरण के सम्बन्ध में कुछ अन्य धारणाएं भी प्रचलित हैं।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखने पर यह पता चलता है कि ऊना जनपद, भौगोलिक परिस्थितियों के चलते, बहुत पुरातन समय से ही बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। काँगड़ा या त्रिगर्त क्षेत्र के प्रवेश द्वार के रूप में इस घाटी ने अंसख्य उतार–चढाव, युद्ध एवं यात्राऐं देखी हैं। क्योंकि बृहद पंजाब के सभी क्षेत्रों, सूबों से कांगड़ा आने वाले लोगों को इस जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से आवश्यक रूप से होकर गुजरना पड़ता था। शिवालिक पहाड़ियों व सोलह सिंगी धार के मध्य में बसी

ये घाटी बेहद उपजाऊ रही है। जालन्धर दोआबा क्षेत्र के साथ लगते ज्यादातर क्षेत्रों एवं जसवाँ रियासत के राजपूत शासकों के प्रभाव के चलते इस जनपद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास मिली जुली संस्कृति के रूप में हुआ प्रतीत होता है। ऊना जनपद के लोगों ने इस मिली जुली या यूँ कहें कि खिच्चड़ी नुमा संस्कृति को ही अपनी असली संस्कृति के रूप में पहचान लिया है तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।

संस्कृति के विभिन्न पहलुओं/तत्वों, जैसे भाषा, रीति–रिवाज़, संस्कार, गीत–संगीत, नृत्य, मेले–त्यौहार इत्यादि सभी बिन्दुओं पर नज़र डालें तो पता चलता है कि संस्कृति के इन दोहरें आयामों के चलते ही ऊना जनपद के बाशिंदों में अपनी सांस्कृतिक पहचान की जददोजहद/छटपटाहट निरन्तर जारी है। इसके साथ–साथ कई मर्तवा ये भी प्रतीत होता है कि शायद संस्कृति के इसी रूप को जनपदवासियों ने अपनी असल सांस्कृतिक पहचान के रूप में स्वीकार कर लिया है।

ऊना जनपद की इसी सांस्कृतिक धरोहर के पिटारे में मौजूद है इस जनपद के कोने–कोने में प्रचलित "गुग्गा जाहरवीर/जाहरपीर" की अमर गाथा की गायन परम्परा। संस्कृति की पूर्ण परिधि में गाथा या लोकगाथा, साहित्य तत्व के साथ जुड़ा हुआ विषय है। 'लोक साहित्य मानवता के सम्पूर्ण इतिहास को समेट कर चलता है और लोक कहे जाने वाले अधिकांश मानव समाजों का दर्पण प्रस्तुत करता है। विभाजन की सुविधा के लिए इसे पाँच भागों में बांट सकते हैं।

1. लोकगाथा 2. लोक गीत 3. लोककथा
4. लोकनाट्य 5. विविध

अतः हम यह देख पा रहे हैं कि लोक गाथाऐं किसी भी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं।

लोक गाथा

"सांगीतिक आवरण में आबद्ध दीर्घ कथा वस्तु की अभिव्यक्ति लोक गाथा कहलाती है। लोकगीतों में गेय तत्व प्रधान होता है तथा कथा या साहित्य पक्ष वहाँ पर गौण रहता है या सूक्ष्म रूप में विद्यमान रहता है।

इसके विपरीत लोकगाथाओं में कथानक विस्तार ही महत्वपूर्ण पहलू के रूप में निहित रहता है। लोक गाथाओं में धर्म, वीरता, रोमांस अर्थात् प्रेम व बलिदान या प्रेम व वियोग इत्यादि ही विषय वस्तु के रूप में स्वोपरि रहते हैं। "लोक गाथाओं का नामकरण भी अलग–अलग क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न प्रकार से किया जाता है।" गुजरात में इन्हें कथागीत कहते है।, महाराष्ट्र में इन गाथाओं को पवाड़ा, पंजाब में इन्हें कहाणा या किस्सा व राजस्थान में गीतकथा का नाम दिया गया हैं राजा हरिश्चन्द्र का किस्सा, आल्हा–उदल, विजयमल, गोपीचन्द, सिद्ध चानो, बाबा बालक नाथ व गुग्गा जाहरवीर की गाथाऐं पूरे उत्तर भारत में प्रचलित हैं। इन नामों को लेने पर ही इन पर प्रचलित गीतों का आश्य प्रकट हो जाता है। ग्रियसन ने इस प्रकार के गीतों को "पापुलर साँग" कहा है।

गुग्गा जाहरपीर की गाथा का सार

गुग्गा जाहरपीर की सम्पूर्ण कथा, उसके जीवन के संर्घष का पूरा विवरण, उसकी वीरता व उसके द्वारा गुरु गोरख नाथ के आशीर्वाद के फलस्वरूप, छल, कपट व धोखे से किए गए हर वार पर प्राप्त की गई विजय की कहानी, पूरे उत्तर भारत में पुस्तक रूप में उपलब्ध है। जिसे पढ़कर हम गुग्गा जाहरपीर की वास्तविक कहानी को जान सकते हैं। विषय की सार्थकता को देखते हुऐ गुग्गा जाहरपीर गाथा को सार रूप में तथा कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को ऊना जनपद में जिस रूप में गाया जाता है, वह बताने का यहाँ प्रयत्न किया जा रहा है।

मारू देश के चौहान वंश में "जयपाल" नाम के राजा थे। राजपरिवार की दो रानियां (जोकि सगी बहनें थी) काछल व बाछल, बेऔलाद थी। पुत्र प्राप्ती के लिए एक रानी बाछल गुरू गोरख नाथ से पुत्र प्राप्ती का वरदान प्राप्त करके दो फल लेकर लौटती है, छल से वो फल दूसरी बहन काछल खा लेती है। दुखी मन से बाछल फिर से गुरू गोरखनाथ से याचना करती है व गुरू से आशीर्वाद स्वरूप मिला हुआ गुग्गल धूप, पानी में घोल कर स्वंय, अपनी दासी व अपनी घोड़ी को पिला देती है। समयानुसार काछल को दो दुर्जन पुत्र अर्जुण व सुर्जन तथा बाछल के घर पुत्र गुग्गामल, घोड़ी को नीला घोड़ा व दासी के यहाँ बेटी गुग्गरी जन्म लेते हैं।

गुग्गामल, विलक्षण वीरता, साहस व प्रतिभा सम्पन्न बालक था। ईर्ष्या के चलते काछल ने उसे मरवाने के अनेकोंनेक प्रयास किये। पाताल लोक से 'सूंक' नाग,

अनेकों जहरीले साँप, नाग और 'तक्षक' नामक नाग को उसे मारने भेजा। गुग्गामल ने बहुत सारे नागों व साँपों को मार डाला। तक्षक नाग ने ब्राह्मण का वेश बनाकर गुग्गा से याचना की व अपने साथी सूंक नाग व बचे हुए नागों को मुक्त करवाया।

युवास्था में गुग्गे की शादी न हो पाए, इसके लिए उसकी मासी काछल ने कई षडयन्त्र रचे व कहीं भी गुग्गामल की सगाई नहीं होने दी। तंग आकर एक बार पुनः रानी बाछल ने गुरू गोरखनाथ को याद किया व उनसे गुग्गामल की शादी करवाने की गुहार लगाई। वश में किए हुए तक्षक नाग व गुरू गोरख नाथ की कृपा से गौड़ राजकुमारी "सुलियर" से इस शर्त पर गुग्गामल की शादी तय हुई कि उसकी बारात में सवा सेर सरसों में जितने दाने गिने जाऐंगे, उतने बाराती गुग्गा अपनी बारात में लेकर आऐगा। गौड़राज ने इस तरह की शर्त इसलिए रखी थी क्योंकि उन्हें भी मन ही मन यह विवाह प्रस्ताव पसन्द नहीं था। देखने में बारात के केवल चार जन ही दिखाई दे रहे थे, गुग्गामल, नीला घोड़ा, गुरू गोरखनाथ व काहनी योगी।

"नियत तिथि से पूर्व ही सवा सेर सरसों के दाने डिब्बिया में डाल कर गुरू गोरखनाथ ने उसे अपनी झोली में रख लिया था व सोने के सेहरे से सजा गुग्गामल, सूरज–चाँद तारों की बारात के साथ, पाँच पांडवों, नौ नाथ, आठ देवियां, नाहर सिंह, देवता गण, चौसठ योगनियाँ, चौरासी सिद्ध, कैलू और कुटाल जैसी हस्तियाँ अपनी बारात में शामिल करके सुलियर को ब्याहने चल पड़ता है।"

तन्त्र–मन्त्र, जादूई शक्तियों के प्रदर्शन के साथ–साथ वीरता पूर्वक चलते हुए इस यात्रा में आई अनगिनत कठिनाईयों व बाधाओं को पार करके गुग्गा गौड़ बंगाल पहुँचने में सफल हो जाते हैं। रास्ते में आई कठिनाइयाँ व बाधाऐं उसके भाई अर्जुन व सुर्जन के साथ–साथ उसके होने वाले ससुर गौड़ राज द्वारा बिछाई गई थी, कारण था कि गौड़ राज अपनी बेटी की सगाई एक अन्य युवक से कर चुके थे। इस बात की जानकारी होने पर गुग्गामल अपने अपमान को सहन न करते हुए गौड़राज द्वारा उसे मारने के अनेकोनेक प्रयासों को गुरू कृपा से विफल करके गौड़राज को यह स्वीकार करवाने में सफल हो जाता है कि वो कोई साधारण युवक नहीं है अपितु अपार दैवीय शक्तियों से सम्पन्न, एक वीर तथा अदम्य साहस से परिपूर्ण योद्धा है।

गौड़ बंगाल पहुँचने पर गुग्गामल ने वहाँ पहले से डेरा लगाकर बैठे राणा मालप को युद्ध में हराकर मौत की नींद सुलाया व अपनी होने वाली सालियों के जादुई हमलों का गुरू के आशीर्वाद से सफलतापूर्वक सामना किया। युद्ध व असंख्य हमलों से क्षत–विक्षत गुग्गामल के शरीर को गुरू गोरखनाथ की प्रार्थना पर पधारे शिव पावर्ती ने अति सुन्दर रूप प्रदान कर दिया। उसके माथे पर चन्द्र चिन्ह, ठुड्डी पर सितारा व दाएं पाँव पर पदम का चिन्ह शोभायमान था।

गौड़राज ने अपनी बेटी सुरियल की शादी गुग्गेमल से कर दी व डोली लेकर आते हुए रास्ते में पुनः अर्जुण व सुर्जण ने गुग्गामल के समक्ष अपना नीला घोड़ा उन्हें दे देने की जिद्द की, या फिर उनसे युद्ध करने को कहा। घोर युद्ध के पश्चात् वे दोनों मारे गए। माता बाछल को गुग्गामल से सारे घटनाक्रम की जानकारी मिली। परन्तु गुग्गे द्वारा भाईयों के मारे जाने की बात सुनकर रानी बाछल ने पुत्र गुग्गे को लताड़ लगाई व उससे दोनों भाईयों को वापस लाने की शर्त रख दी।

शर्त सुनकर गुग्गामल नीले घोड़े पर सवार होकर हवा में लुप्त हो गया। सुरियल उसकी मिन्नतें करती रह गई। गुग्गामल राजस्थान की धरती पर जाकर मुसलमान पीर बन गया। सुनियल को इस बात का पता चला तो उसने राजस्थान जाकर पति से अपने त्याग का कारण पूछा। गुग्गा ने उसे निर्दोष बताते हुए कुछ शर्तों पर उससे मिलने आने का वायदा किया। अपने वायदे के चलते वो रात्री में सुरियल से मिलने जाने लगा।

गुग्गा आता और सवेरे उजाला होने से पहले लौट जाता। राजस्थान जाकर कुरान की आयतें पीरों–फकीरों में पढ़ता। रानी बाछल को सुरियल के सजने धजनें की वजह से शक पैदा हुआ व सुरियल पर दबाब बनाकर पूछने पर सारी बात जान ली। शर्तों की जानकारी होते हुए भी माँ अपनी ममता के मारे गुग्गा से मिलने जा पहुँची। मुर्गे की बाँग से जगा गुग्गामल हड़बड़ाहट में जाने लगा तो माता बाछल ने उसे गले लगा लिया। माता को वहाँ पाकर, गुस्से से अलग होने में गुग्गे की माला टूटकर बिखर गई। माता उन मोत्तियों को समेटने लगी तभी पत्नी व माँ से नाराज़ गुग्गा राणा सदा के लिए लुप्त हो गया।

धार्मिक परिपेक्ष

गुग्गा गाथा की यह सारी कहानी, तब से लेकर आज तक राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल के कुछ हिस्सों व जम्मु के कुछ क्षेत्रों में गाकर सुनाने की प्रथा निरन्तर जारी है।

धार्मिक पहलू

प्राचीन समय में कभी कांगड़ा क्षेत्र का हिस्सा रहे ऊना जनपद के सभी धर्मों को मानने वाले लोगों में आज भी गुग्गा पूजा प्रचलित है। नृत्य का भी सीधा सम्बन्ध गुग्गा पूजा से है, जिसमें प्रायः जोगी लोग ही भाग लेते हैं। जोगी रंग–बिरंगी डोरियां लटकाकर, हाथ पैरों में राख मलकर, हाथ में छतरी व लोहे की सोठी(छड़ी) लेकर गंभीर मुद्रा बनाते हुए दबातरे तथा ढोल बजाते हुए, मोर पंख के मुट्ठे झुला–झुलाकर नाचते हैं। ढोल की ताल के ज़ोर पकड़ते ही नृत्य में तेजी आती जाती है।

ऊना जनपद में गुग्गा को देवता के रूप में माना जाता है और व्याप्त जन विश्वास के अनुसार गुग्गा पशु धन की भलाई करता है एवं सांपों से उनकी रक्षा करता है। लगभग हर गांव में गुग्गा का स्थान बना होता है। उस स्थान की सेवा करने वाले को गुग्गा का चेला कहा जाता है। लोक धारणा के अनुसार गुग्गा चेला की आत्मा में प्रवेश करके उसके मुख से समस्याओं का समाधान सुझाता है। जब गुग्गा की आत्मा उसमें प्रवेश करती है तो चेला खेलने लगता है और प्रश्नों के उत्तर देता है।

रक्षा बन्धन से जन्माष्टमी तक गुग्गा सप्ताह मनाया जाता है। रक्षा बन्धन के दिन चेला भोज देता है, जिसे गुग्गा का श्राद्ध कहा जाता है। उस दिन रात को डमरु की ताल पर गुग्गा गाथा गाई जाती है। दूसरे दिन गुग्गा का चेला पत्तों का छत्र (बड़ी छतरी) लेकर गुग्गा कार के लिए चल पड़ता है और उसके हाथ में एक लोटा और त्रिशूल होता है। उसके साथ गुग्गा गाथा गाने वाली एक मण्डली तथा एक व्यक्ति कार (आटा, अनाज, घी व शक्कर इत्यादि) लेने वाला होता है। वे गांव के प्रत्येक आंगन तथा घर पर जाते हैं। इस मण्डली में चार से अधिक सदस्य होते हैं और उनके पास चार डमरू होते हैं। इनमें से आधे एक ओर और आधे दूसरी ओर बंट जाते हैं। यह मण्डली लोगों के घर आंगन पहुँचने पर डमरू बजाती है। जिससे घर वालों को उनके आगमन की सूचना मिल जाती है और वे गुग्गा गाथा

सुनने के लिए तैयार हो जाते हैं। गाथा को दल के कुछ सदस्य पहले गाते हैं और दूसरे बाद में दोहराते हैं। सभी डमरू एक साथ बजाए जाते हैं और इस संगीतमय वातावरण में श्रोता भी गाथा दल के साथ झूमने पर मज़बूर हो जाते हैं। चेला किसी भी समुदाय से सम्बन्द्ध हो सकता है, परन्तु कलाकार दलित जातियों के ही होते हैं। जातीय समुदाय के अनुसार इस संगीत के स्वर भी भिन्न होते हैं। चमार समुदाय के कलाकार सीधी तर्ज पर गाते हैं जबकि बाल्मिकि, भंजड़ा तथा जुलाहा समुदाय की तर्ज (धुन) संगीत शास्त्र के अनुसार होती है।

गुग्गा सप्ताह में ये लोग सब घरों में जाते हैं। जिन लोगों ने मन्नतें मांगी होती हैं वे अपनी सुविधानुसार गुग्गा गाथा का कार्यक्रम आयोजित करवाते हैं। इस कार्यक्रम को दिहाड़ी कहा जाता है। यह कार्यक्रम सारी रात चलता है और मण्डली का मुखिया साथ–साथ व्याख्या भी करता जाता है। जिससे लोगों को गाथा के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त होती है। इसी दौरान चेले को भार चढ़ता है अर्थात् उसमें गुग्गा की आत्मा प्रवेश करती है। इस अवसर पर अन्य भक्तों को भी जंजीरों से अपने शरीर को पीटते हुए देखा जा सकता है। ये मण्डलियां पुत्र जन्म तथा पुत्र विवाह वाले घरों में बधाई गाती हैं। पुत्र जन्म वाले घर में गुग्गा गाथा का वह भाग गाया जाता है, जिसमें गुग्गा के जन्म का वर्णन है तथा उसके पिता राजा जयमल को लोग बधाई देते हैं। पुत्र विवाह वाले घरों में गुग्गा का विवाह गाया जाता है। इस बधाई के लिए उन घरों से विशेष तथा अतिरिक्त अन्न व धन लिया जाता है।

प्राप्त एवं एकत्रित अन्न व धन को मण्डली के सदस्य आपस में बांट लेते हैं। गुग्गा नवमीं वाले दिन उस अन्न से गुग्गा का प्रसाद(रोट) बनाया जाता है तथा प्रसाद के रूप में सब लोगों में बांटा जाता है।

गुग्गा के चेले के पास जो लोटा होता है, उसमें ज्योति के लिए मांगा गया घी डाला जाता है। गुग्गा का चेला नवमीं वाले दिन भोज का आयोजन करता है और गुग्गा के स्थान पर छिंज(कुश्ती) भी करवाई जाती है। इन कार्यक्रमों में सारे स्थानीय लोग शिरकत करते हैं। गुग्गे का छत्तर व डोरू(डमरू) व अन्य वाद्य यन्त्रों को विधिवत पूजा अर्चना के उपरान्त गुग्गे के समक्ष चढ़ाया जाता है व आगामी कार्यक्रम तक सुरक्षित रख लिया जाता है।

गुग्गा गाथा के गायन की परम्परा में उसके जीवन से जुड़े प्रसंगों व घटनाओं को गाया जाता है, इन प्रसंगों को कड़ी–दर–कड़ी जोड़कर पूरी गाथा को सुनाने की परम्परा का निर्वहन इस जनपद में किया जाता है। इस अमर गाथा से जुड़े दो प्रसंगों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है– (1) गुग्गा जन्म, (2) एक युद्ध का वर्णन

प्रस्तुत गीत का भावार्थ है कि गुग्गा स्वतंत्र प्रवृति का वीर पुरूष था। स्वपन के माध्यम से उसने अपनी माँ बाछल से यह आग्रह किया था कि वह अपने घर पर ही जन्म लेना चाहता है ना कि नानिहाल में। इसलिये उसकी माँ को अपने मायके से अपने ससुराल लौटना पड़ा। इससे सम्बन्धित मण्डलियों द्वारा गाया जोने वाला गीत इस प्रकार से है–

तू ढाडा वे परवाह कुदरता तेरियां
पहला माह गणेंदिए राणिये
दूजा माह चढ़ेया कुदरता तेरियां
तीजा माह गणेंदिए राणिये
ओह चौथा माह चढ़ेया कुदरता तेरियां
पंजमा माह गणेंदिए राणिये
छयां माह चढ़ेया कुदरता तेरियां
तू ढाडा वे परवाह कुदरता तेरियां
सतमा माह गणेंदिए राणिये
अठ्ठमा माह चढ़ेया कुदरता तेरियां
नौवां माह गणेंदिए राणिये
राणें चन्म लेया कुदरता तेरियां
तू ढाडा वे परवाह कुदरता तेरियां

गुग्गा ने अपने जीवन काल में अनेक युद्ध लड़े। उनके युद्धों का सजीव वर्णन गीतों में हुआ है। एक लोकगीत प्रस्तुत है–

रूदन करेंदी राणी–रूदन करेंदी
रूदन करेंदी दिन–रात
भला जी मैन्नूं तेरी सोह,
रूदन करेंदी दिन–रात
छड लेया घोड़ा, नाले हटा लेईयां बागां

माता दे मन्दिरां नूं जा,
भली जी, मैन्नूं तेरी सोह
माता दे मन्दिरां नूं जा।
आंदा सवार नाल़े माता ने देख्या
पौर तां जांदे कम्ल़हा
पला जी, पौर तां जांदे कम्ल़हा
कादो तां लाये हत्यार?
चढ़ने दी खातिर, मैं घोड़ा गंगारेया
लड़ने नूं ला ले हत्यार, नी माता,
लड़ने नूं ला ले हत्यार।
जोड़ेयां नाल़ बेटा लड़न ना जावीं,
गल्ली तां लैणें समझा, ओ बेटा,

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गुग्गा लोक देवता के प्रति ऊना के जनमानस की असीम धार्मिक भावनाऐं व गहरी आस्थायें जुड़ी हुई हैं। लोगों की विपत्तियों, कष्टों का निवारण, विशेषकर पशुधन से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण, सर्पदंश हो जाने पर गुग्गा के स्थान पर ले जाकर उक्त व्यक्ति की झाड़–फूँक इत्यादि करके विष से मुक्ति दिलाना, इन सब मान्यताओं में ऊना के जनमानस का विश्वास आज भी अति प्रबल तथा दृढ़ रुप से विद्यमान है।

संदर्भ

ऊना जनपद एक परिचय, विनोद लखनपाल एवं अजय पराशर, समाजधर्म प्रकाशन, 2011
हिमाचल लोकगीत मंजूषा, प्रो. चमन लाल गुप्त, निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली,
हिमाचल संस्कृति एवं समाज, लोकगीतों के दर्पण में, प्रो. चमन लाल गुप्त, निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली,
हिमाचल संस्कृति एवं समाज, लोकगीतों के दर्पण में, प्रो. चमन लाल गुप्त, निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली,